प्रातः क्लास   पिता श्री   ओमशान्ति   26-11-67

रिकार्डः- नयन हीन को राह दिखाओ प्रभुः- ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाते हैं। पहले2 अपन को आत्मा समझ कर बैठो। अर्थात देही अभिमानी होकर बैठो। सारा कल्प तुम देहाभिमान होकर रहे हो। अभी इस समय में जब कि वापस जाना है तो देहीअभिमानी होकर बैठना हैं। वापस कहां जाना हैं। स्वीट-होम। आत्मा कहती हैं हम अपने घर जाते हैं। आगे हम अपने घर का रास्ता नहीं जानते थे। भारत तो क्या सारी सृष्टि में रे भी मनुष्य ऐसा नहीं जो अपने घर का रास्ता जानता हो। तो गोया हो गये अंधे। जो मनुष्य अपनेघर जीवन मुक्ति धाम को नहीं जानते हैं। गाय हुआ भी हैं अंधे के औलाद अंधे। अब अंधा किसको कहा जावे। अंधा कहा जाता हैं रावण को न कि राम को। रावण और रावण सम्प्रदाय हैं ना। इनको कहा ही जाता हैं आसुरी सम्प्रदाय। अंधे सम्प्रदाय। क्योंकि बलाईन्ड फेथ हैं ना। किसकी भी पूजा करते हैं पर उनको जानते नहीं हैं। शिव को ऊंच समझते हैं ना। शिव परमात्मा नमः कहते हैं। ब्रहमा देवताएं नमः, विष्णु देवताएं नमः कहेंगे। ब्रहमा विष्णु शंकर को भगवान हनीं कहेंगे। यह हैं देवताएं। जब कि ब्रहमा विष्णु, शंकर को देवता कहा जाता हैं तो जरूर भगवान कोई दूसरा हैं। भगवान कहा ही जाता हैं निराकार को। जिसको न साकारी शरीर हैं न आकारी शरीर हैं। न सूक्ष्म वतनवासी हैं, न स्थूल वतन वासी हैं। वह रहते ही परमधाम में हैं जहां से तुम आते हो पार्ट बजाने। शिव परमात्माए नमः कहने से बुधि में फ आता हैं कि वह निराकार हैं। बाकि सब का शरीर हैं। एक उनका ही शरीर नहीं हैं। ल०ना० राधे-कृष्ण राम सीता आद सब शरीर धारी हैं। शिव तो हैं लिंग। उनको शरीर ही नहीं। परमात्मा हैं ही एक। उनकी महिमा ही अलग हैं। ब्रहमा विष्णु शंकर की महिमा अलग हैं। हर एक का अलग 2पार्ट हैं। ड्रामा प्लेन अनुसार। ब्रहमा को कब पतित पावन नहीं कहेंगे। अभी पवित्र आत्माओं की स्थापना हो रही हैं। फिर शंकर द्वारा विनाश गोया अपवित्र आत्माओं का विनाश हो जावेगा। सतयुग में तो बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। कलियुग मेंअनेक पतित मनुष्य हैं। जहां पतित हैं वहां पावन एक भी नहीं। जहां पावन हैं वहां पतित एक भी नहीं हो सकता। पतित आत्माएं पुकारती हैं हे पतितों को पावन करने वाले आकर हमको पावन बनाओ। बरोबर पुरानी दुनिया को पतित, नई दुनिया को पावन कहा जाता हैं। पुरानी दुनिया को नर्क, नई दुनिया को स्वर्ग कहा जाता हैं। ल०ना० सतयुग के देवताएं हैं। इन्हों को भगवान भगवति भी कहते हैं। परन्तु बाप समझाते है भगवान एक ही होता हैं। बाकि सभी आत्माएं हैं बच्चे। ब्रदर्स। फिर शरीर में आने से भाई बहन बनते हैं। तुम आत्माएं वास्तव में शिव बाबा के सन्तान ब्रदर्स हो। फिर एडाप्शन बच्चे बनते हो तो भाई-बहन हो जाते हो। यहां तुम सभी कहेंगे हम भाई-बहन हैं। प्रजापिता ब्रहमा के सन्तान हम पढ़ रहे हैं। तुम से कोई पूछे तुम कौन हो तो तुम कहेंगे हम प्रजापिता ब्रहमा के कुमार और कुमारियां हैं। आत्मा की दृष्टि से हम भाई-भाई हैं। हमारा बाप हैं निराकार। जो फिर साकार शरीर में आकर समझाते हैं। नही तो सृष्टि के आद मध्य अन्त का राज कैसे समझावे। शरीर बिगर तो आत्मा बोल न सके। न कुछ भी कर सकती हैं। बाप कहते हैं मुझे भी शरीर जरूर चाहिए। गीत में भी सुना नयनहीन को राह बताओ प्रभु। अब प्रभु किसको कहेंगे। क्या कृष्ण को? नहीं। श्री कृष्ण तो पुरे 84 जन्म लेते हैं। वह हैं सतयुग का प्रिन्स। फिर स्वयंम्वर बाद नाम बदल कर श्री नारायण पड़ता हैं। अच्छा, श्री कृष्ण को श्याम सुन्दर क्यों कहते हैं। वह तो विश्व का प्रिन्स था। फिर उनको गांवरे का छोड़ा क्यों कहते हैं! यह तो हो नही सकता। कुछ जरूर अन्तर हैं। श्री कृष्ण जैसा सुन्दर और कोई देवता हो नही सकता। है तो मनुष्य। परन्तु उनको देवता क्यों कहा जाता हैं क्योंकि उनमें दैवी गुण हैं। अभी तुम संगम पर बैठे हो। वह श्री कृष्ण सुन्दर था। अभी यह हैं श्याम। वह गोल्डेन एजेड, यह आयरन एजेड। श्री कृष्ण गोल्डेन एज में था। फिर तो नाम रूप देश-काल फिरता आता हैं। पिछाड़ी में आकर श्याम बना हैं। तब बाप कहते हैं तुम अपने जन्मों को नहीं जानते थे।

इस ज्ञान के पहले तुम सृष्टि के आद, मध्य, अन्त को नहीं जानते थे। तुम कहते भी हो प्रभु आकर राह बताओ। यहां बहुत दुःख हैं। इनको दुःखधाम, सतयुग को सुखधाम कहा जाता हैं। दुःखधाम में सीढ़ी उतरनी हैं जरूर सब को। सतयुग के निवासियों को नीचे उतरते2 फिर कलियु ग वासी जरूर बनना हैं। अब सब नर्क वासी ठहरे। परन्तु अपन को कोई नर्कवासी समझते थोड़े ही हैं। स्वर्ग, नर्क का भी किसको पता नहीं। यह गीत तो कलियुगी मनुष्यों का ही बनाया हुआ हैं। तुम अभी हो संगम युगी। बुलाते भी हैं हे प्रभु हम नयन हीन को आकर राह बताओ। क्योंकि दुःख हैं। सतयुग तो हैं ही सुखधाम। शान्तिधाम और सुखधाम , दुःखधाम। यह तो तुम बच्चे समझ गये हो। हम ने ही 84 जन्म लिये हैं। तब यहाँ आये हैं। जो आत्माएं पहले आई हैं वही आत्माएं पहले जावेंगी। सारी बरात जावेंगे। जो आत्माएं पहले आई हैं वह पुरे 84 जन्म भोग फिर चले जावेंगे। हर एक को अपना पार्ट रिपीट करना हैं। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी है ना। इनको सिर्फ तुमको ही मालूम हैं। वह लोग तो सिर्फ कहने मात्र कहते हैं वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट। कैसे रिपीट होता हैं यह नहीं जानते। ऋषि-मुनि भी नेती2 कहते गये। अर्थात हम नहीं जानते। न जानने वाले को नास्तक कहा जाता हैं। तुम से पूछे तुम रचता और रचना के आद, मध्य अन्त को जानते हो। तो तुम झट कहेंगे हां। गोया तुम आस्तक ठहरे। तुमको आस्तक बनाया जाता हैं। जब तक ब्राहमण -ब्राहमणी , ब्रहमा-कुमार कुमारी न बने तो देवता कैसे बने। पहले2 हैं ब्राहमणों की चोटी। फिर देवता क्षत्री.... बाजोली खेलते हैं ना। कोई फुल खेलते हैं कोई फुल नहीं खेलते हैं। वर्णो का चित्र हैं ना। उनमें देवता क्षत्री वेश्य शुद्र दिखाई हैं। बाकि ब्राहमण नहीं दिखाई हैं। ब्राहमण तो जरूर हैं। जब कोई पूजा शुरु होती हैं या यज्ञ रचते हैं तो ब्राहमण जरूर बैठते हैं। सतयुग में तो यज्ञ आद होती नहीं। द्वापर कलियुग में मनुष्य अनेक प्रकार के यज्ञ रचते हैं। शिव को कहा जाता हैं। अनेक यज्ञ रचेंगे। क्यों यज्ञ रचते हैं, यह रसम रिवाज़ कहां से आई। भक्ति मार्ग में जो कुछ होकर गया हैं वह रिपीट होता रहता हैं। जैसे त्योहार हैं वह भी रिपीट होते रहते हैं। तुम्हारा तो यह हैं बेहद का यज्ञ। इन में सारी पुरानी दुनिया स्वाहा हो जावेंगी। फिर कोई यज्ञ रचेंगे नहीं। सतयुग त्रेता में कोई आपदा आती नहीं। जब कोई आपदा आती हैं तब ही यज्ञ रचते हैं। सतयु ग में तो यह बातें होती नहीं। इस समय सभी मनुष्य हैं नयनहीन। यह नयन तो सब को हैं। परन्तु अब आत्मा को तीसरा नेत्र मिलता हैं। बाकि भक्ति मार्ग में तो सब झूठी कथाएं बैठ सुनाते हैं। तीज़री की कथा। अमर कथा। यह शास्त्र सब हैं भक्ति मार्ग के। सतयुग त्रेता हैं ज्ञान मार्ग। फिर द्वापर कलियुग में भक्ति मार्ग होता हैं। रावण को हर वर्ष जलाते हैं। परन्तु अर्थ समझते नहीं हैं। एफ जी दुश्मन के जलाते हैं। रावण कब का दुश्मन हैं यह कोई को पता ही नहीं हैं। अभी तुम जानते हो रावण राज्य का विनाश और रामराज्य की स्थापना होती हैं। वह तो सिर्फ कथा बैठ सुनाते हैं। जो होकर गये हैं उन्हों के फिर शास्त्र बैठ बनाते हैं। द्वापर के बाद। सतयुग में तो शास्त्र भक्ति, पूजा आद कुछ भी नहीं होती। वह हैं पूज्य। द्वापर कलियुग में होते है पुजारी। जाहं पूज्य हैं वहां पुजारी नहीं। यहां सब पुजारी हैं। पूज्य एक भी नहीं। तुम अभी पूज्य बन रहे हो। सतयुग त्रेता में हैं पूज्य। द्वापर में पुजारी अर्थात नर्कवासी होते हैं। सब पूजा करते रहते हैं। शंकराचार्य भी शिव की पूजा करते हैं तो उनको पूज्य थोड़े ही कहा जा सकता। पूज्य को पुजारी माथा टेकते हैं। यहां हैं ही सब पुजारी। पूज्य कोई हैं नहीं। पूज्य हैं सिर्फ एक बाप। और सभी पूज्य से पुजारी बनते हैं। राधे कृष्ण पहले नम्बर में थे। फिर इन्हों को 84 जन्म लेने हैं। आधा कल्प पूज्य और आधा कल्प पुजारी। आपे ही पूज्य आपे ही पुजारी मनुष्य के लिए हैं। बाप तो सदेव पूज्य हैं। उनको शरीर तो है नहीं। यह तो सिर्फ लोन लेते हैं। इसलिए इनको भागीरथ कहा जाता हैं। भागीरथ द्वारा बाप आये ज्ञान सुनाते हैं। बाकि पानी की बात नहीं। वह सब हैं

भक्ति मार्ग की झूठी बातें। वह सुनते2 पढ़ते2 सीढ़ी नीचे उतरते ही आये हैं। भारत सच्च खन्ड था। अब झूठ खन्ड है। सच्चे सोने में अलाये पड़ती हैं ना। गोल्डेन एज से सिलवर, फिर कापर आयरन एज में आती हैं। आत्मा जो सतोप्रधान थी वह तमोप्रधान बनी हैं। यह हैं कलियुग आयरन एजेड दुनिया। गोल्डेन एजेड दुनया का अभी नाम निशान नही हैं। जो भी दैवी देवताएं है इन्हों को आयरन x एजेड मनुष्य जाकर माथा टेकते हैं। आप सर्व गुण सम्पन्न ... हम नीच विकारी हैं। हम निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। देवताओं की महिमा गाते हैं। जो विकारी पापी मनुष्य हैं वह अपन को कहते हैं हम नीच पापी हैं। जो वायसलेस हैं वह अपन को ऐसे कहेंगे नहीं कि हम ऐसे हैं। वह तो हैं ही। गायन भी हैं विसस वर्ल्ड और वायसलेस वर्ल्ड। वैश्यालय और शिवालय। शिव बाबा शिवालय स्थापन कर रहे हैं। जो पवित्र बनेंगे वही स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यह गीत हैं नम्बर वन। दूसरा हैं जाग सजनियां जाग। ऐसे 2 गीत अच्छे हैं। परन्तु गीत बनाने वाले भी इनका अर्थ नहीं समझ सकते। बाप ही आकर समझाते हैं। यह है विचित्र पाठशाला। जहां तुमको मनुष्य से देवता बनाया जाता है। तुमको ही शिव बाबा पढ़ाते हैं। उसका एक्युरेट नाम हैं शिवालय। अभी हैं वेश्यालय। विष्णु को क्षीर सागर में दिखाते हैं ना। तो यह लोग भी बड़ा2 तालाब क्षीर का बनाये उसमें विष्णु का बड़ा चित्र रखते हैं। ज्ञान तो पुरा हैं नहीं। विष्णु को भी काला बनाये दिया हैं। अभी तुम जानते हो यह काम चिता पर बैठे हैं तब काले बने हैं। इन्हों ने फिर देवताओं को ही काला कर दिया हैं। मनुष्य बिलकुल ही मुंझ पड़े हैं। कुछ भी समझते नहीं। सीढ़ी उतरते ही आते हैं। तमोप्रधानता की आयु वृद्धि को पाती ही जाती हैं। इसको कहा जाता हैं अज्ञान x भक्ति। गायन भी हैं ज्ञान अंजन सदगुरु दिया अज्ञान अंधेर विनाश। ज्ञान हैं ना। अज्ञान भक्ति हैं रात। देहली में ज्ञान-विज्ञान भवन हैं ना। परन्तु इसका भी अर्थ नहीं समझते। जैसे त्रिमूर्ति x गली वा भवन कहते हैं ना। समझते थोड़ेही हैं। तीन मूर्ति किसकी = ? लिखा हुआ भी हैं सत्य मेव जयते। अक्षर तो ठीक हैं। तीन मूर्ति उपर में शिव बाबा होता हैं x तो तुम्हारी विजय हो। शिव बाबा बैठ तुमको नालेज देते हैं। परन्तु शिव बाबा को ही गुम कर दिया हैं। तीन मूर्ति ब्रहमा विष्णु शंकर हैं। परन्तु वह कुछ करते थोड़े हो हैं। ब्रहमा को भी पाउन्ड बनाने वाला शिव बाबा ही हैं। शिव बाबा बिगर तो ब्रहमा, विष्णु, शंकर भी हो न सके। शिव हो तब ब्रहमा द्वारा स्थापना करे। शिव बाबा का नाम ही उड़ाये दिया हैं। वैसे ब्राहमण जो चोटी हैं वह भी उड़ाये दिया हैं। तो सब बातें खन्डन हो गई। तब ही बाबा कहते हैं गीता का भगवान कौन इस एक ही बात पर अगर तुम ने विजय पाई तो तो तुम सारे विश्व पर जीत पहन सकते हो। बाप की बायोग्राफी में बच्चे का नाम डाल दिया दिया हैं। जो पुरे ही 84 जन्म लेते हैं। गीता में भी बाप के बदली बच्चे का नाम डाल दिया दिया हैं। वह झूठी गीता सुनते2 नीचे ही उतरते आये हैं। पहने xx नम्बर में हैं गीता। गीता खन्डन तो सभी खन्डन हो जाते हैं। सब गपोड़े ही गपोड़े हैं। कोई भी शास्त्र में एक्आक्जेक्ट नहीं हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। यह हैं ही राज योग। और कोई शास्त्र में राजयोग की बात नहीं। बाप ही कहते है मन्मनाभव। अर्थात बाप को याद करो। कोई शास्त्र में नहीं हैं। कहते हैं शास्त्रार्थ करो। हैं ही झूठी तो फिर बाद-बिबाद क्या करेंगे। फायदा ही नहीं। झूठ और सच्च का बाद-बिबाद हो सकता हैं। झूठ का बाद-बिवाद होता हैं क्या। तुम सच्ची गीता से वर्सा पाये रहे हो। यह झूठी गीता पढ़ते2 गिर ही पड़े हैं। यह हैं ही पतित दुनिया। नर्क में पावन कोई हो नहीं सकता। वह सतयुग, यह कलियुग। तुम हो संगम पर। इनमें भी नम्बरवार हैं। कोई की तो आधा टांग कलियुग में, आधा टांग संगम पर हैं। सृष्टि के आद, मध्य, अन्त का राज़ तो बाप के सिवाय कोई समझाये कैसे सकते। ऋषि-मुनि ही कहते गये हम नहीं जानते हैं। तो परमपरा यह चल कैसे सकता। बाप कहते हैं यह ज्ञान प्रायः लोप हो जाता हैं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग।